

सिद्धान्त और जीवन

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

पुनरुत्थान कार्यक्रम जीवन को नयी दिशा देने वाला एक ऐसा कार्यक्रम है जिसमें जीवन को बुराई से अच्छाई की ओर ले जाने के लिए नये-नये प्रवचनों और नये-नये विचारों से अवगत कराया गया है। सिद्धान्त और जीवन एक ऐसा विषय है जिसमें लोगों को बौद्धिक और सांस्कृतिक मूल्यों से अवगत कराया गया है। जीवन क्या है? जन्म के साथ जीवन प्रारंभ हो जाता है। बचपन आनन्द के साथ व्यतीत होता है। जैसे-जैसे उम्र बढ़ती जाती है वैसे-वैसे जिम्मेदारियों का भी एहसास होने लगता है। जीवन महत्वपूर्ण है। हर व्यक्ति जीवन जीता है। आयुष्य कर्म के अनुसार जीवन चलता है। जन्म के साथ मृत्यु भी शुरू हो जाती है। जन्म और मृत्यु के बीच के अन्तराल को जीवन कहते हैं। जीवन के अनुपात में हम समाज को क्या देते हैं, यह महत्वपूर्ण है। हर देश में बहुत से लोग रहते हैं। भारत में तो जनसंख्या का बोझ इतना अधिक है कि विकास करने के बावजूद भी वह परिलक्षित नहीं हो पाता। इसका मुख्य कारण यह है कि जनसंख्या की वृद्धि के अनुपात में विकास में वृद्धि नहीं हो रही है। इसलिए विकास का लाभ समाज के हर वर्ग को नहीं मिल पाता। जो योग्यतम है विकास का लाभ वही ले पाता है। सिद्धान्त भी जीवन का एक पक्ष है। जितने भी महापुरुष हुये हैं उनके जीवन में सिद्धान्तों का बहुत बड़ा महत्व रहा है। भगवान बुद्ध, भगवान महावीर, कबीर, सूर, तुलसी, विवेकानन्द, रविन्द्रनाथ टैगोर और महात्मा गांधी जैसे महापुरुषों ने एक आदर्श जीवन व्यतीत करके समाज को कुछ सिद्धान्त दिया है। यह सिद्धान्त मानव के विकास का सिद्धान्त है। इन महापुरुषों ने केवल सिद्धान्त ही नहीं दिया बल्कि उस सिद्धान्त के अनुसार जीवन-यापन करके दिखलाया भी। स्वामी विवेकानन्द का जीवन इस सम्बन्ध में महत्वपूर्ण है। एक ऐसे परिवार में उन्होंने जन्म लिया जहां पर जीवन के प्रारम्भिक समय में ही विपत्तियों का सामना करना पड़ा। किन्तु विपत्तियों को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। बल्कि उन पर विजय प्राप्त करके समाज को एक नई दिशा दी।

विवेकानन्द के बचपन का नाम नरेन्द्र देव था। जब वे स्वामी रामकृष्ण परमहंस के सम्पर्क में आये तो उनके व्यक्तित्व में आमूलचूल परिवर्तन आ गया और वे नरेन्द्रनाथ से स्वामी विवेकानन्द हो गये। शिकागो के धर्म सम्मेलन में उनका दिया गया भाषण आज भी लोग याद करते हैं। उन्होंने विश्व में भारत को एक नयी पहचान दी। विवेकानन्द वेदान्त दर्शन के प्रचार-प्रसार में लगे रहे। युवकों को सदैव वे प्रेरित करते थे। उठो जागो और मंजिल को प्राप्त करो। अच्छा जीवन जीने के लिए कुछ सिद्धान्त होने चाहिए। सिद्धान्त से ही चरित्र का निर्माण होता है। जिस व्यक्ति का चरित्र गिर जाता है, समाज में उसका कुछ भी महत्व नहीं रहता। ज्ञान का रूपान्तरण चरित्र है। ज्ञान का उपयोग चरित्र निर्माण में होना चाहिए। वेदों, उपनिषदों, आगमों में जीवन जीने के अनेक सिद्धान्त दिये गये हैं। यदि उन सिद्धान्तों का जीवन में उपयोग किया जाये तो जीवन सही दिशा में चलता है। झूठ न बोलो, ईमानदारी सबसे बड़ा गुण है, किसी भी प्राणी को दुःख न दो, माता-पिता की सेवा करो, असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतम् गमय जैसे सिद्धान्त परक वाक्य जीवन को नई दिशा देने वाले हैं। समाज के लिए जो कुछ भी कहा जाता है उसे समाज याद करता है। महात्मा गांधी ने अहिंसा, सत्य जैसे सिद्धान्तों को पहले जीवन में उतारा फिर उसका लोगों में उपदेश किया। इसीलिए आज इन महापुरुषों का नाम आदर्श के साथ लिया जाता है। किसी भी सिद्धान्त का जीवन में पालन करने से जीवन परिष्कृत और उन्नत होता है। मनुष्य को अपनी सामर्थ्य अच्छे कार्यों में लगानी चाहिए। अच्छाई और बुराई दो चीजें हैं। बुराई से दुर्गति होती है और अच्छाई से समाज में सम्मान मिलता है। बुराई से प्राप्त धन अस्थायी होता है। ईमानदारी से जीवन-यापन करने वाला व्यक्ति पूजनीय हो जाता है।

भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र भाई मोदी ने गुजरात के मुख्यमंत्री रहते हुये जिस ईमानदारी और प्रशासनिक क्षमता का परिचय दिया उसी का परिणाम उन्हें प्राप्त हुआ और भारत को विश्व में एक नया स्थान दिला दिया है। गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में गुजरात को एक नयी पहचान दी थी। विकास के रोडमॉडल के रूप में अन्य प्रदेशों को भी विकास करना चाहिए, यह उनका मन्तव्य था। अपनी ईमानदारी और सेवा वृत्ति के कारण विश्व में आदर के साथ उनका नाम लिया जाता है। देश के उन्नति के लिए वे कार्य कर रहे हैं। 125

करोड़ जनता के भलाई के लिए उनकी सभी योजनाएं हैं। सिद्धान्तों से जीवन में स्थिरता आती है। अहिंसा का सिद्धान्त भारत की संस्कृति का मूलमन्त्र है। 'अहिंसा परमो धर्मः', 'सत्यमेव जयते' आदर्श वाक्य हमें जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। झूठ कभी नहीं बोलना चाहिए। झूठ बोलने से मनुष्य की किमत्त घट जाती है। महात्मा गांधी अहिंसा के सिद्धान्त के आधार पर अंग्रेजों को भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया था। उनका जीवन सिद्धान्त पूर्ण जीवन था। मद्य, मांस का त्याग करने का उन्होंने आजीवन व्रत लिया था। प्राप्त मन, वचन और काया से जगत् के प्राणियों को कष्ट नहीं देना चाहिए। यह सबसे बड़ा धर्म है। धर्म का व्यावहारिक स्वरूप जीवन में उतारना चाहिए। सदाचार पूर्ण जीवन जीने से आयु तो बढ़ती ही है समाज व्यवस्था भी ठीक ढंग से संचालित होती है। सदाचारी सदैव समाज में सम्मान पाता है, उसके सिद्धान्त अन्य लोगों के लिए भी अनुकरणीय है।